राष्ट्रीय हिन्दी विज्ञान सम्मेलन-2015

ग्वालियर, मध्य प्रदेश

दिनांक 11–12, दिसम्बर, 2015

आयोजनकर्ता

जीवाजी विश्वविद्यालय,
ग्वालियर

विज्ञान भारती, मध्यप्रदेश,
भोपाल (म.प्र.)

मध्य प्रदेश विज्ञान एवं
प्रौद्योगिकी परिषद,
भोपाल (म.प्र.)

अटल विहारी वाजपेयी
भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी
एवं प्रबंधन संस्थान,
ग्वालियर (म.प्र.)

रक्षा अनुसंधान
एवं विकास स्थापना,
ग्वालियर (म.प्र.)

अटल विहारी वाजपेयी
हिन्दी विश्वविद्यालय,
भोपाल

यदि भारत में विज्ञान मातृभाषा के जरिये
पढ़ाया गया होता तो आज भारत दुनिया के
अग्रणी देशों में होता।

-प्रो. सी.वी. रमन

अवधारणा

जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर, विज्ञान भारती, मध्यप्रदेश, भोपाल, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद्, भोपाल और अटल बिहारी वाजपेयी भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी एवं प्रबंध संस्थान, ग्वालियर, रक्षा अनुसंधान एवं विकास स्थापना, ग्वालियर एवं अटल बिहारी बाजपेई हिन्दी विश्वविद्यालय, भोपाल के संयुक्त तत्वाधान में ग्वालियर में राष्ट्रीय हिन्दी विज्ञान सम्मेलन-2015 का आयोजन 11–12, दिसम्बर, 2015, को जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर में किया जा रहा है। इस सम्मेलन का उद्देश्य स्वदेशी विज्ञान का प्रचार–प्रसार कर, विज्ञान में शोध व अध्ययन को मातृभाषा में उपलब्ध कराने में आने वाली समस्याओं के समाधान हेतु प्रयास करना व वैज्ञानिकों व शोधकर्ताओं ने जो परिणाम दिये हैं उन्हें किसानों, विद्यार्थियों, व्यवसायियों तक मातृभाषा हिन्दी में उपलब्ध कराने हेतु पूर्ण प्रयास करना। हिन्दी भाषा का समावेश करते हुए विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी का प्रचार-प्रसार करना है। मध्यप्रदेश विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद् विज्ञान एवं तकनीक के क्षेत्र में कार्यरत देश की अग्रणी राज्य संस्था है तथा विज्ञान भारती आमजन के बीच चल रहा विज्ञान आंदोलन है जिसे दो बार सर्वोच्च राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। अटल विहारी वाजपेयी भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी एवं प्रबंधन संस्थान अनेक विषयों में शिक्षा प्रदान करता है।

रक्षा अनुसंधान एवं विकास स्थापना, ग्वालियर, रक्षा मंत्रालय के अंतर्गत कार्यरत एक महत्वपूर्ण प्रयोगशाला है।

जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर कार्यक्रम की मेजबानी कर रहा है, यह मध्यप्रदेश की अग्रणी संस्था है जो शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य कर रही है।

समाज के सर्वांगीण विकास के लिए विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में शोध एवं प्रयोगों को नये सिरे से आगे बढ़ाने की आवश्यकता है। संभावनाएं अपार है, लेकिन दिशा में व्यापक बदलाव की जरूरत है। अपनी मातृभाषा में किसी भी विषय का अध्ययन शोध एंव प्रेषण सुगम होता है इस बात को ध्यान में रखते हुए सभी हिन्दी भाषा या हिन्दी भाषा में कार्य करने में रूचि रखने वालों के लिए यह सम्मेलन एक मजबूत आधार प्रदान करेगा। इस सम्मेलन में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के कई आयामों को शामिल किया गया है।

राष्ट्रीय हिन्दी विज्ञान सम्मेलन 2014 :राष्ट्रीय हिन्दी विज्ञान सम्मेलन की शुरुआत पिछले वर्ष 2014 में भोपाल से शुरू हुई जिसका आयोजन विज्ञान भारती, म० प्र० के द्वारा म० प्र० विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद, भोपाल, अटल बिहारी बाजपेयी हिन्दी विश्वविद्यालय, भोपाल के संयुक्त तत्वाधान में किया गया । इसमें 250 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया, 175 शोध पत्र प्राप्त हुए जिनमें से 100 से अधिक शोध पत्रों का वाचन हुआ, 4 विषयों में गंभीर परिचर्चा हुई । इस सम्मेलन में सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि राष्ट्रीय हिन्दी विज्ञान सम्मेलन का आयोजन प्रतिवर्ष किया जाए साथ ही हिन्दी भाषा में एक शोध पत्रिका का प्रकाशन भी किया जाए जिसकी घोषणा श्री भूपेंद्र सिंह ठाकुर, मान० मंत्री, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, म० प्र० शासन द्वारा की गई ।

आयोजक

जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर : जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर की स्थापना 23 मई 1964 को मध्य प्रदेश शासन के अध्यादेश क्रमांक 15 सन् 1963 के द्वारा हुई। 11 दिसंबर सन् 1964 को भारत गणराज्य के तत्कालीन राष्ट्रपति महामहिम सर्वपल्ली राधाकृष्णन द्वारा लगभग 248 एकड़ भूमि में विस्तृत इस विश्वविद्यालय की आधारशिला नौलखा परेड मैदान पर रखी गई। ग्वालियर–चंबल से 450 से भी अधिक महाविद्यालयों के माध्यम से लगभग 2 लाख छात्रों को उच्च शिक्षा एवं शोध उपलब्ध कराने वाला यह विश्वविद्यालय देश के अग्रणी विश्वविद्यालयों में से एक है। विश्वविद्यालय को शोधकार्य, शैक्षणिक स्तर एवं अधोसंरचना विकास की अन्य उपलब्धियों हेतु राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद ने उच्च श्रेणी 'ए' में रखा।

विज्ञान भारती : विज्ञान भारती का मुख्य ध्येय है भारतीय संस्कृति एवं दर्शन के वैज्ञानिक आधार एवं स्वदेशी विज्ञान से, आधुनिक विज्ञान तथा भारतीय वांग्मय एवं पुरातात्विक साक्ष्य द्वारा प्रदत्त विज्ञान तथा तकनीकी ज्ञान का समन्वय कर, भारत के प्रत्येक क्षेत्र तथा वर्ग के उत्थान हेतु उसका उपयोग कर अपने भारत वर्ष को परम वैभवशाली बनाने का मार्ग प्रस्तुत करना है। विश्व को प्रकृति से तारतम्य

विज्ञान भारती का ध्येय वाक्य है :"अविद्यया मृत्यु तीर्त्वाडमृतमश्नुते" (भौतिक विज्ञान की सहायता से मृत्यु के कारणों पर विजय प्राप्त कर आध्यात्मिक विज्ञान की सहायता से उच्चतम अमृतत्व प्राप्त करना) विज्ञान भारती (अखिल भारतीय पंजीकृत संस्था) अपनी राष्ट्रीय संचालक परिषद् द्वारा कार्य करती है। इस (संस्था) की प्रान्तीय इकाईयॉ हैं, जो प्रान्तीय संचालक परिषदों द्वारा अपना–अपना कार्य संचालित करती हैं। इस समय देश के विभिन्न राज्यों में 27 सक्रिय इकाईयाँ हैं।

मध्यप्रदेश विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद, भोपाल : मध्यप्रदेश विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद् की स्थापना 1981में भारत शासन के मार्गदर्शन में विज्ञान के क्षेत्र में प्रदेश की नोडल इकाई के रूप में की गई। परिषद् विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भारत की एक अग्रणी संस्था है। परिषद् का वर्तमान मुख्यालय विज्ञान भवन, भोपाल में स्थित है। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद का मुख्य उद्देश्य नयी प्रौद्योगिकी का लोकव्यापीकरण करने के साथ साथ उन पिछड़े क्षेत्रों का विकास भी करना है जो कि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के प्रयोग से विकसित किये जा सकते हैं। परिषद् की पाँच प्रमुख गतिविधियाँ–सूदूर संवेदन उपयोगिता केन्द्र, जैव प्रौद्योगिकी उपयोगिता केन्द्र, तकनीकी प्रबंधन केन्द्र, अनुसंधान एवं विकास की गतिविधियॉ, विज्ञान का लोकव्यापीकरण हैं। परिषद् मध्य प्रदेश में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में स्थापित नेटवर्क में माध्यम से कार्य करती हैं। हम नेटवर्क में सभी प्रमुख विश्वविद्यालय और तकनीकी विश्वविद्यालय, एवं विज्ञान पर आधारित संस्थाएं आती हैं।

अटल विहारी वाजपेयी-भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी एवं प्रबंधन संस्थान, ग्वालियर: इसकी स्थापना मानव संसाधन एवं विकास मंत्रालय द्वारा 1997 में की गई। सूचना प्रौद्योगिकी एवं प्रबंधन शिक्षा, उत्कृष्ट शोधकार्य के द्वारा गुणवत्ता के नवीन आयाम प्रदान करने वाला अद्वितीय संस्थान है। इसे उत्कृष्ट शिक्षा एवं शोधकार्य हेतु **ISO** –9001–2008 प्रमाण पत्र प्राप्त है।

रक्षा अनुसंधान एवं विकास स्थापना, ग्वालियर : रक्षा अनुसंधान एवं विकास स्थापना (डीआरडीई) ग्वालियर, भारत सरकार, रक्षा मंत्रालय के अंतर्गत कार्यरत एक महत्वपूर्ण प्रयोगशाला है जो खतरनाक पदार्थों एवं सूक्ष्म जीवों के विरुद्ध उत्कृष्ट पहचान, बचाव एवं विसंदूषण प्रौद्योगिकियों के अनुसंधान एवं विकास में कार्यरत है। डीआरडीई ग्वालियर ने देश की रक्षा सेनाओं की आवश्यकता के अनुरूप सामग्रियों एवं उत्पादों के विकास के साथ–साथ सिविल क्षेत्र के लिए भी कई उत्पादों एवं प्रौद्योगिकियों का विकास किया है।

अटल बिहारी वाजपेयी हिन्दी विश्वविद्यालय, भोपाल : मध्यप्रदेश और भारतवासियों के स्वभाषा और सुभाषा के माध्यम से ज्ञान की परम्परागत और आधुनिक विधाओं में शिक्षण–प्रशिक्षण की व्यवस्था और हिन्दी को गौरवपूर्ण स्थान दिलाने के लिये मध्य प्रदेश सरकार द्वारा इसकी स्थापना 19 दिसम्बर 2011 को की गयी। इस विश्वविद्यालय का प्रमुख उद्देश्य हिन्दी भाषा को अध्यापन, प्रशिक्षण, ज्ञान की वृद्धि और प्रसार के लिये तथा विज्ञान, साहित्य, कला और अन्य विधाओं में उच्चस्तरीय गवेषणा हेतु शिक्षण का माध्यम बनाना है।

सम्मेलन की रूपरेखा

सम्मेलन मुख्य रूप से निम्नलिखित दो हिस्सों में विभाजित होगा–परिचर्चा एवं शोध पत्र प्रस्तुतिकरण :

परिचर्चा :

- ★ शोध पत्र प्रस्तुतिकरण लेखन एवं हिन्दी भाषा मे विज्ञान शिक्षण विषय पर परिचर्चा,
- ★ हिन्दी भाषा में विज्ञान परक सूचना के ऑनलाइन एवं डिजीटल सूचना संग्रहण (स्टोरेज) एवं पुनर्प्राप्ति (रिट्रीवल) पर परिचर्चा,
- ★ जनजातीय विज्ञान कौशल पर परिचर्चा,
- ★ वंशावली ज्ञान प्रबंध के परीक्षण में सहायता।

शोध पत्र प्रस्तुतिकरण के मुख्य विषय :

- ★ कृषि एवं बागवानी,
- ★ पर्यावरण विज्ञान एवं वानिकी,
- ★ जल प्रबंधन,
- ★ ऊर्जा प्रबंधन,
- ★ खनिज संसाधन एवं पदार्थ विज्ञान / प्रौद्योगिकी,
- ★ भवन, वास्तुविद्या एवं आपदा प्रबंधन,
- ★ मूलभूत विज्ञान : गणित, भौतिकी, रसायन शास्त्र, भू–विज्ञान, खगोलिकी, जीव विज्ञान,
- ★ प्रगत प्रौद्योगिकी (जैव प्रौद्योगिकी, सूचना प्रौद्योगिकी तथा नैनो प्रौद्योगिकी),
- ★ हिन्दी भाषा के माध्यम से विज्ञान संचार,
- ★ अभियांत्रिकी विज्ञान एवं तकनीकी,
- ★ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी धरोहर एवं उसकी वर्तमान उपादेयता,
- ★ विज्ञान, समाज एवं देशज ज्ञान,
- ★ आयुर्विज्ञान एवं योग,
- ★ पशुपालन एवं पशु चिकित्सा विज्ञान।

शोध पत्र आमंत्रण

लेखकों से **केवल हिन्दी भाषा में** (सार–200 शब्द, यूनीकोड / कृति देव 010, फोन्ट साईज़ – 12, ए–4 साईज़, एमएस वर्ड, सिंगल स्पेस, पेज में एक इंच मार्जिन चारों तरफ) शोध पत्र निम्नलिखित तिथियों के अनुसार आमंत्रित हैं, स्वीकृत सारांश प्रतिभागी अपने शोध पत्र सम्मेलन में प्रस्तुत कर सकेगें। जिन प्रतिभागियों का विस्तृत शोध पत्र स्वीकृत होगा वह प्रोसीडिंग में भी प्रकाशित होगा और कुछ उत्कृष्ट शोध पत्र हिन्दी शोध पत्रिका में भी प्रकाशित किए जावेगें। शोध पत्र hindivigyansammelan2015@gmail.com पर प्रेषित करें।

महत्वपूर्ण तिथियाँ

गतिविधि	अन्तिम तिथि
शोध पत्र सारांश	25, अक्टूबर, 2015
सारांश स्वीकृति सूचना	05, नवम्बर, 2015
विस्तृत शोध पत्र	20, नवम्बर, 2015
कार्यक्रम	11,12, दिसम्बर 2015

पंजीयन शुल्क

सामान्य प्रतिभागी	रु. 1500/–
विद्यार्थी	रु. 500/–

पंजीयन शुल्क में सम्मेलन सामग्री एवं भोजन सम्मिलित है।

पंजीयन शुल्क पंजीयन प्रपत्र के साथ **"राष्ट्रीय हिन्दी विज्ञान सम्मेलन" के नाम पर भोपाल** में देय डी० डी० के माध्यम से प्रस्तुत करें।

पुरस्कार

उत्कृष्ट शोधपत्र एवं पोस्टर प्रस्तुतीकरण के लिए प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार दिये जावेंगे।

आवास

प्रतिभागियों को आवास स्वयं के व्यय पर प्रदान किया जायेगा। प्रतिभागी स्वयं या आयोजकों के माध्यम से आवास आरक्षित कर सकेगें। आयोजकों द्वारा आरक्षण हेतु आवास शुल्क अग्रिम जमा करना होगा। आवास व्यवस्था ग्वालियर के शासकीय अतिथि गृह, विद्यार्थी छात्रावास या होटलों में की जावेगी जो रू.1000/– से रू.4500/– के बीच होगी।

आवास हेतु "राष्ट्रीय हिन्दी विज्ञान सम्मेलन" के नाम पर, भोपाल,में देय डी.डी. के माध्यम से प्रस्तुत करें।

समितियाँ

मुख्य संरक्षक :

श्री शिवराज सिंह चौहान, माननीय मुख्यमंत्री, मध्य प्रदेश शासन

डॉ. विजय पी. भटकर, राष्ट्रीय अध्यक्ष, विज्ञान भारती

संरक्षक :

श्री नरेन्द्र सिंह तोमर,
मान. मंत्री, कोयला एवं खनन, भारत सरकार

डॉ. नरोत्तम मिश्रा,
मान. मंत्री, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण, चिकित्सा शिक्षा, म. प्र. शासन

श्री उमा शंकर गुप्ता,
मान. मंत्री, तकनीकी शिक्षा एवं उच्च शिक्षा, म. प्र. शासन

श्रीमती यशोधरा राजे सिंधिया,
मान. मंत्री, वाणिज्य, उद्योग, रोजगार, म. प्र. शासन

श्रीमती माया सिंह,
मान. मंत्री, महिला एवं बाल विकास, म. प्र. शासन

श्री भूपेंद्र सिंह ठाकुर,
मान. मंत्री, परिवहन, विज्ञान एवं सूचना प्रौद्योगिकी म.प्र. शासन

श्री लाल सिंह आर्य,
मान. राज्य मंत्री, नर्मदा घाटी विकास, सामान्य प्रशासन, म. प्र. शासन

श्री अनूप मिश्रा,
मान. सांसद, मुरैना

मार्गदर्शक मंडल :

डा० के. आई. वासु, संस्थापक, विज्ञान भारती, बैंगलोर

डा० वी. के. सारस्वत, सदस्य, नीति आयोग,
पूर्व डी जी, डी०आर०डी०ओ०,नई दिल्ली

डा० अनिल काकोडकर, पूर्व अध्यक्ष,परमाणु ऊर्जा आयोग, मुम्बई

डा० अनिल सहस्त्रबुद्धे, चेयरमेन,
ऐ.आइ.सी.टी.ई., नई दिल्ली

प्रो. बी. आर. छीपा, कुलपति,
स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर

सलाहकार मंडल :

श्री ए. जयकुमार,
राष्ट्रीय महासचिव, विज्ञान भारती, नई दिल्ली

श्री जयंत शहस्त्रबुद्धे,
राष्ट्रीय संगठन मंत्री, विज्ञान भारती, भोपाल

प्रो० प्रमोद कु० वर्मा,
महानिदेशक, मध्यप्रदेश विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद, भोपाल

प्रो० अखिलेश पाण्डेय, अध्यक्ष, निजी वि.वि. नियामन आयोग, भोपाल

डा० एन० पी० शुक्ला, अध्यक्ष, म० प्र० प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, भोपाल

प्रो० मोहन लाल छीपा, कुलपति,
अटल बिहारी बाजपेई हिन्दी विश्वविद्यालय भोपाल

प्रो० बी० के० कुठियाला, कुलपति,
माखनलाल पत्रकारिता विश्वविद्यालय, भोपाल

प्रो० मुकुन्द हम्बर्डे, महानिदेशक,
छत्तीसगढ़ ग्रामीण विकास एवं प्रौद्योगिकी परिषद, रायपुर

डॉ. नवीन चंद्रा, भोपाल

डॉ. सत्यव्रत दास, निदेशक, एम्प्री, भोपाल

प्रो० अन्ना जी काकिर्डे, इन्दौर

श्री प्रवीण रामदास, क्षेत्रीय संगठन मंत्री, उत्तर क्षेत्र, दिल्ली

डा० सोमदेव भारद्वाज, विज्ञान भारती, ग्वालियर

प्रो. डी.सी. तिवारी, जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर

आयोजन समिति

अध्यक्ष : प्रो. संगीता शुक्ला,
कुलपति, जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर

सह अध्यक्ष : प्रो. आर. जे. राव,
कुलाधिसचिव, जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर

प्रो. एस.जी. देशमुख,
निदेशक, अटल बिहारी वाजपेयी सूचना प्रोद्योगिकी एवं प्रबंधन संस्थान, ग्वालियर

डॉ. लोकेन्द्र सिंह,
निदेशक, डीआरडीई, ग्वालियर

प्रो. आनंद मिश्रा,
कुलसचिव, जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर

महासचिव : डा. जय प्रकाश शुक्ल,
प्रमुख वैज्ञानिक एम्प्री, भोपाल

संयोजक : डॉ. रामगोपाल गर्ग, समन्वयक,
पत्रकारिता एवं जनसंचार,
जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर

सह.संयोजक : डा० डी. एस. राठौर, ग्वालियर

आयोजन सचिव: इं रत्नेश सिंह, ग्वालियर

आयोजन सहसचिव: इं. संजय कौरव, ग्वालियर

कोषाध्यक्ष : श्री आशुतोष खरे, डबरा

सदस्य : डॉ. अनिल कोठारी, भोपाल

प्रो० संजय तिवारी, रायपुर

डा० राम अचल, देवरिया

डा० एम० एम० पी० श्रीवास्तव, इन्दौर

डा. करुणा वर्मा, जबलपुर

डा. एन. के. चौबे, भोपाल

डॉ. सुनील गर्ग, भोपाल

डा. शिव कुमार दुबे, शहडोल

डा. शिखा अग्रवाल, भोपाल

इं. अमर शर्मा, अध्यक्ष, जीईसी, ग्वालियर

इं. रंजीत सिंह तोमर, शैक्षणिक अधिष्ठाता,
आईटीएम विश्वविद्यालय, ग्वालियर

श्री शरदचन्द्र श्रीवास्तव,
विजयाराजे कृषि विश्वविद्यालय, ग्वालियर

श्री डी.पी. सिंह, अ.वि.वा.–भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी एवं प्रबंधन संस्थान,ग्वालियर

डॉ. अनंत मोहन श्रीवास्तव,
विजन लेजिक सेन्टर, ग्वालियर

श्री अनुराग श्रीवास्तव,
अ.वि.वा.–भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी एवं प्रबंधन संस्थान,ग्वालियर

डॉ. सुनीता शर्मा, जबलपुर

श्रीमती चित्रलेखा कडेल, उज्जैन

डॉ. परितोष मालवीय,
रक्षा अनुसंधान एवं विकास स्थापना, ग्वालियर

डॉ. सुनील मिश्रा, कानपुर

डॉ. विवेक तलवार

डॉ. हेमवती नंदन,
गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

डॉ. आदर्श पाल विग, अमृतसर

श्री समीर वोहरा, जम्मू

श्री गोविन्द पारिख, अजमेर

युग-युगीन ग्वालियर

ग्वालियर नगर राजनैतिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से अत्यन्त समृद्वहै। अनुश्रुतियों के अनुसार इसका 'ग्वालियर' नामकरण एक सिद्वतपस्वी 'ग्वालिपा' के आधार पर हुआ है। गुप्तेश्वर पर्वत की कुछ गुफाओं में अंकित शैलचित्र यहाँ प्रागैतिहासिक यायावर मानव के निवास की पुष्टि करते हैं।

मौर्य, शुंग–सातवाहन, कुषाण, गुप्त और हूण आदि राजवंशो का यहाँ शासन था। ह्वेनसांग नामक एक चीनी यात्री ने 7 वीं शती, ई. में इस नगर का नाम "महेश्वरपुर" उल्लिखित किया है। तदनन्तर यहाँ गुर्जर, प्रतिहार, कच्छपघात, परवर्ती प्रतिहार, तोमर और सिन्धिया आदि राजवंशों ने क्रमशः लगभग 8 वीं शती से लेकर 20 वीं शती ई. के मध्य तक शासन किया है। ग्वालियर और संगीत एक दूसरे के बिना अधूरे हैं। तानसेन और बैजू बावरा ने पारलौकिक गन्धर्व की तरह संगीत को अपनी अमृतवाणी से सींचा और "ध्रुपद गायन" की एक नवीन संगीत विधा को जन्म दिया। ध्रुपद गायन की यह शैली संगीत जगत में "ग्वालियर घराना" के नाम से विख्यात है। सुप्रसिद्व सरोद वादक उस्ताद अमजद अली खान वर्तमान में ग्वालियर के संगीत घराने की अमूल्य धरोहर हैं। ग्वालियर दुर्ग पर स्थित करण मन्दिर, मान मन्दिर, गूजरी महल और विक्रम मन्दिर तोमरकालीन स्थापत्य कला के अद्वितीय उदाहरण हैं। जहाँगीर द्वारा ग्वालियर दुर्ग पर निर्मित जहाँगीर महल और शाहजहाँ द्वारा निर्मित 'शाहजहाँनी महल' की वास्तुकला भी बेजोड़ है। तोमर शासन काल में ग्वालियर नगर की जल आपूर्ति व्यवस्था अद्वितीय थी। यह अत्यन्त वैज्ञानिक और व्यावहारिक हुआ करती थी। सागर ताल, गंगोला ताल आदि इसके ज्वलन्त उदाहरण हैं। सिन्धिया शासनकाल में निर्मित बैजा ताल, मोती महल, विक्टोरिया कॉलेज, विक्टोरिया मार्केट, टाउन हाल आदि स्थापत्य उदाहरणों में फ्रांस की भवन निर्माण कला और भारतीय वास्तु कला का अद्भुत सामंजस्य है। सिन्धिया शासकों के स्मारक (छतरियाँ) भी अतीव मनमोहक हैं।

पंजीयन प्रपत्र

नाम.....पदनाम .....

सम्बद्धता.....

पत्राचार का पता.....

दूरभाष एस टी डी कोड.....संख्या.....

फैक्स एस टी डी कोड.....संख्या.....

ईमेल.....

शोध पत्र प्रस्तुति.....हाँ नहीं

लेखकों के नाम .....

.....

शीर्षक .....

.....

तारीख : .....स्थान : ..... हस्ताक्षर

पत्राचार हेतु पता : संयोजक, राष्ट्रीय हिन्दी विज्ञान सम्मेलन, 2015, पत्रकारिता एवं जनसंचार अध्ययन केन्द्र, जी.वाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर म.प्र. – 474011 **email : hindivigyansammelan2015@gmail.com**
संपर्क: 09425712479, 09893101073, 09425756101, 09893925730
पंजीयन शुल्क हेतु डी. डी. बावत पता : राष्ट्रीय हिन्दी विज्ञान सम्मेलन, भोपाल

पंजीयन शुल्क ऑनलाइन जमा करने हेतु बैंक डिटेल्स

(a) **Account number: 1459010028343**
(b) **Account Name: Hindi Vigyan Sammelan**
(c) **Bank Name: United Bank of India**
(d) **Branch Name & code: M.P. Nagar Branch, MPN664**
(e) **IFSC Code: UTBI0MPN664**
(f) **MICR Code: 462027003**
(g) **Bank Branch &Address :**
M.P. Nagar Branch, 278, Zone- 2, M.P. Nagar,
Bhopal-462011(M.P.), Phone No. 0755-2550317